



ऐतिहासिक हरेकृष्ण महताब

शिशिर बेहेरा, पीएच-डी, ओड़िया भाषा और साहित्य विभाग
महाराजा श्रीरामचंद्र भंजदेव विश्वविद्यालय, बारिपदा, मयूरभंज, ओड़िशा, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Author

शिशिर बेहेरा, पीएच-डी

E-mail : sisiramscbu@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/03/2026
Revised on : 18/05/2026
Accepted on : 27/05/2026
Overall Similarity : 00% on 19/05/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: May 19, 2026 (02:59 PM)
Matches: 0 / 2324 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

इतिहास लिखने की क्षमता केवल ग्रंथ अध्ययन या उपलब्ध तथ्यों पर आधारित होने से सफल नहीं हो सकती। इतिहास के प्रति अनुराग, ऐतिहासिक दृष्टिकोण और सबसे महत्वपूर्ण, समय की विवेचना और तर्क आधारित विश्लेषण भी इतिहास रचना और चर्चा में प्रमुख सहायक होते हैं। इतिहास लेखन के साथ ही आपको इतिहास में स्थान पाने की योग्यता बहुत कम लोगों के जीवन में संभव होती है। यदि कोई व्यक्ति स्वयं इतिहास का हिस्सा हो, तो वह उस समयखंड की घटनाओं को सही ढंग से दर्ज कर सकता है। ऐसे व्यक्ति अद्भुत व्यक्तित्व वाले हैं उकरलकिशोरी हरेकृष्ण महताब। ओड़िशा के राष्ट्रीय जीवन में वे इतिहास और किंवदंती पुरुष के रूप में सुप्रसिद्ध हैं। वे न केवल ओड़िशा की राजनीति में, बल्कि संपूर्ण भारत में दूरदर्शी, कुशल, राष्ट्रनीति और कूटनीति के विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हुए। संघर्ष, क्रांति और अन्याय के खिलाफ उनकी साहसिकता स्पष्ट रूप से प्रमाणित है। महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रेरित होकर उन्होंने असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और जेल भी गए इसलिए महताब का जीवन संघर्ष, राजनीति, इतिहास और साहित्य का मिश्रण है।

मुख्य शब्द

इतिहास, स्वाधीनता आन्दोलन, ओड़िशा विद्रोह, ब्रिटिश शासन, राजनीति, कलिंग इतिहास.

भूमिका

भारत का इतिहास जानने के लिए महताब को पढ़ना अनिवार्य है। उनके इतिहास प्रेम और ऐतिहासिक दृष्टिकोण को सभी मान्यता देते हैं। जीवन के अंतिम समय तक उन्होंने इतिहास लेखन का प्रयास जारी रखा। महताब ने 'साधना पथ' में लिखा है: "प्रत्येक व्यक्ति अपनी साधना के मार्ग पर अग्रसर होता है। मार्ग में कभी-कभी पीछे लौटना पड़ता है, उसी तरह अपने जीवन के अतीत अनुभवों पर भी विचार करना आवश्यक है। मैं स्वयं को वृद्ध नहीं मानता। वास्तविकता में मैं वृद्ध नहीं हूँ। अपने विचार में दृढ़ रहकर संसार में आगे बढ़ना

मेरा स्वभाव बन गया।”

घटनाओं से भरा उनका जीवन एक चलता-फिरता इतिहास है। उन्होंने भारतीय इतिहास को प्रत्यक्ष अनुभव किया। गाँव से लेकर देश की उच्चतम सीमाओं तक उनकी यात्रा तेज़ रही। जीवन के हर पहलू का अध्ययन करने पर कई अनजाने तथ्य हमारे सामने आते हैं। उन्होंने अनेक कठिनाइयों का सामना किया और कई निर्माणों के साक्षी बने। बेजेलगेट हत्याकांड में गिरफ्तार हुए, अंग्रेज़ अधिकारी लाट साहेब हदनालुईस की शांति सुरक्षा की सलाह पर वे राजद्रोह के आरोप से फांसी से बचे। ‘कनिका मेलि’ के समय कनिका महाराजा के खिलाफ विशेष मुकदमे में उन्होंने सफलता प्राप्त की। वर्षों तक जेल में रहने के बावजूद उन्होंने स्वतंत्र भारत में आदर्श सरकार के विरोध में भी जेल का जीवन भोगा। महताब ने जेल में रहते हुए जनता के मनोबल बढ़ाने के लिए कई पुस्तकें लिखीं। उनकी लिखी हुई ऐतिहासिक पुस्तकें उपयोगी और प्रामाणिक हैं। जैसे: ‘दशवर्ष ओड़िशा’, ‘गांधीजी और ओड़िशा’, ‘साधनार पथ’, ‘ओड़िशा इतिहास’, ‘ओड़िशा विद्रोह का इतिहास’ आदि। उनके ग्रंथों में राष्ट्रीय जीवन, आंदोलनों, विभिन्न राज्यों और भारत के उच्चतम नेतृत्व के साथ उनके संबंधों का विस्तृत वर्णन है।

महताब ने देश की परिस्थितियों को गहराई से समझा और जटिल परिस्थितियों में भी भारत को आगे बढ़ाने का प्रत्यक्ष अनुभव किया। उन्होंने नेतृत्व किया, स्वतंत्र ओड़िशा को विकसित करने के लिए यथोचित कदम उठाए। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक भारत तक के परिवर्तन और विकास को निकटता से देखा और कई बार उनका स्वयं भी इसका हिस्सा बने। इस प्रकार, महताब एक लेखक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जननायक, प्रवीण राजनीतिज्ञ और पत्रकार के रूप में अपने अनुभवों को ग्रंथों में अंकित कर गए। ऐतिहासिक दृष्टिकोण और प्रामाणिक इतिहास लेखन में हरेकृष्ण महताब का योगदान अमूल्य है। दैनिक विवरण लिखने का अभ्यास उन्हें इस मार्ग में बहुत मददगार साबित हुआ। इसके लिए उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि वे महात्मा गांधी से प्रेरित थे। उन्होंने कहा: “दैनिक विवरण लिखकर रखना गांधीजी के आश्रम द्वारा प्रवर्तित एक नियम था। इससे व्यक्ति को स्वयं को जानने में मदद मिलती है। अभ्यासवश मैं दैनिक विवरण लिखता रहा हूँ। सभी पत्र-पत्रिकाओं को संभालकर रखने में मेरी उत्सुकता बराबर रही। बार-बार घर तलाशी लेकर बहुत से पत्र-पत्रिकाएं पुलिस द्वारा जब्त कर नष्ट कर दी जाती थीं, फिर भी मेरी कॉलेज के समय से कई पत्र-पत्रिकाएं और दैनिक विवरण आज तक सुरक्षित हैं इसलिए मुझे अपने अतीत पर विचार करने में मदद मिलती है।”

१९३५ में प्रकाशित महताब की पुस्तक ‘दशवर्ष की ओड़िशा’ उनका यह विवरण आधारित पहला इतिहासिक ग्रंथ था। इसे १९३० में जेल में रहते हुए लिखा गया और १९३१ में पूरा किया गया। इसमें १९२० के असहयोग आंदोलन से लेकर १९३० के नमक सत्याग्रह तक स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओं को ओड़िशा के संदर्भ में लिखा गया है। यह तत्कालीन ओड़िशा की स्थिति का एक प्रामाणिक दस्तावेज़ है। इसे प्रकाशित होने के बाद ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था, लेकिन इसकी लोकप्रियता के कारण १९३७ में आदेश वापस ले लिया गया। इसमें दर्ज तथ्यों ने इतिहास के कई पहलुओं को उजागर किया। उदाहरणस्वरूप, इंगुडी के नमक कानून का उल्लंघन महताब ने इस प्रकार दर्शाया, जिससे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ उनका प्रतिरोध और देशभक्ति स्पष्ट होती है। उन्होंने वर्णन किया कि कैसे आम लोग साहसपूर्वक अन्यायपूर्ण नमक कानून का उल्लंघन कर रहे थे, स्त्री-पुरुष-बच्चे सभी लाठी-प्रहार सहकर इसे निभा रहे थे। इंगुडी सत्याग्रह में ओड़िशा के सभी क्षेत्रों से सेनानी आए। कटक से ‘लौहस्तंभ सेना’, पुरी से ‘पतितपावन सेना’, संबलपुर और गंजाम से अन्य सेनाएँ इंगुडी के रणक्षेत्र में शामिल हुईं। आसपास के गाँवों के लोग गाँव-गाँव जाकर नमक कानून का उल्लंघन कर रहे थे। इसके परिणामस्वरूप कानून रद्द हुआ और हजारों लोग जेल गए। इसी प्रकार महताब ने अंग्रेज़ों के अन्याय और ओड़िशा की स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं को दस्तावेज़ रूप में प्रस्तुत किया। उनका दूसरा पुस्तक अंग्रेज़ी में १९३६ में प्रकाशित हुआ, जो गढ़जाती संबंधी एक उपयोगी ऐतिहासिक ग्रंथ है। हरेकृष्ण महताब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारी समिति के सदस्य थे और उन्होंने ओड़िशा के गढ़जाती राज्यों की प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन कर समाधान के लिए एक समिति का गठन किया।

उनकी तीसरी महत्वपूर्ण पुस्तक ‘ओड़िशा इतिहास’ है, जो पहली बार १९४८ में प्रकाशित हुई। यह ओड़िशा का संपूर्ण इतिहास बताती है और ओड़िशा की संस्कृति, गौरव और ऐतिहासिक घटनाओं को विस्तारपूर्वक दर्शाती है। इसे अंग्रेज़ी और ओड़िया दोनों भाषाओं में लिखा गया और इसका उद्देश्य ओड़िशा का परिचय पूरे भारत में स्थापित करना था। १९४२ में अहमदनगर की किलेबंदी के दौरान उन्होंने इस पुस्तक पर काम शुरू किया और जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणा से इसे लिखा। यह पुस्तक दो भागों में है: पहला भाग ओड़िशा की उत्पत्ति से मुगल शासन तक, और दूसरा भाग मराठा शासन से आगे की घटनाओं तक। यह ग्रंथ केवल ओड़िशा का इतिहास नहीं है, बल्कि ओड़िया जाति के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का एक जीवंत परिचय भी है। इतिहासकार महत्वपूर्ण इस ग्रंथ के लिए ओड़िया जनता के बीच सम्माननीय बने हुए

हैं। इतिहासकार कृष्णचंद्र पाणिग्राही कहते हैं: “यदि कोई सामान्य पाठक या शिक्षक ओड़िशा के इतिहास की संपूर्ण जानकारी जानना चाहे, तो उसे स्वर्गीय अध्यापक राघालदास बनर्जी और डॉक्टर हरेकृष्ण महत्त्व के इतिहास पर निर्भर करना पड़ेगा। कई लोग कहते हैं कि दोनों ग्रंथों में कई त्रुटियाँ हैं। कोई भी ग्रंथ पूर्णतया त्रुटिरहित नहीं है लेकिन तीस वर्षों की समर्पित कोशिशों के बाद, जिन्होंने ओड़िशा के पूर्ण इतिहास को साहस, धैर्य, नींद और श्रम के साथ अपने ग्रंथों में अंकित किया है, दोनों पंडितों का निश्चित रूप से धन्यवाद किया जाना चाहिए।”

१९४६ में प्रकाशित उनके एक अन्य पुस्तक में भारत के देशीय राज्यों के मिश्रण समय की विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं और विवरणों का स्थान है। इसे पढ़कर सरदार बल्लभभाई पटेल ने महत्त्व को सराहना दी और उन्हें सच्चा देशभक्त कहा। इसी प्रकार ऐतिहासिक ग्रंथ के रूप में हम ‘साधनार पथ’ को स्वीकार कर सकते हैं। डॉ. महत्त्व की आत्मकथा में ६० वर्षों के भारत के इतिहास का वर्णन है। इसे उनके जीवन-संघर्ष का इतिहास कहा जा सकता है। इसमें इतिहास की विभिन्न घटनाओं का परिचय पाठक को मिलता है। महत्त्व के जन्म (१८६६) से लेकर १९५० के मिश्रण तक ओड़िशा और भारत की घटनाएँ इसमें अंकित हैं। कई महत्वपूर्ण पत्र भी उक्त पुस्तक में संलग्न हैं, जिनमें ब्रिटिश शासनकालीन भारत और राष्ट्रीय नेतृत्व की असाधारण दक्षता को पाठक देख सकते हैं।

डॉ. हरेकृष्ण महत्त्व का एक और उल्लेखनीय ग्रंथ ओड़िशा के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास है, जो अंग्रेजी में पाँच खंडों में संकलित है। इनमें से चौथा खंड १९५७ में प्रकाशित हुआ और अंतिम खंड १९५६ में।

प्रथम खंड १७५७-१८५७, द्वितीय खंड १८५७-१९११, तृतीय खंड १९११-१९३०, चतुर्थ खंड १९३०-१९४७, पंचम खंड क्रमशः १९३०-१९४७।

शोधार्थी ने विशाल भारतवर्ष में हुई विभिन्न गतिविधियों और ऐतिहासिक घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से अंकित किया है। ओड़िशा इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी पाठकों के लिए व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत की गई है। अंग्रेजों के लिखित पत्रों का उचित संयोजन इन ग्रंथों को और प्रामाणिक बनाता है। उसी प्रकार, अंग्रेजी में दो खंडों में उन्होंने ‘Orissa History’ नामक ग्रंथ लिखा। इसमें ओड़िशा इतिहास के कई अज्ञात अध्याय और राजनीतिक पृष्ठभूमि उजागर किए गए हैं। डॉ. महत्त्व का एक अन्य महत्वपूर्ण इतिहास ग्रंथ ‘गांधीजी और ओड़िशा’ १९७१ में प्रकाशित हुआ। ओड़िशा प्रदेश गांधी शताब्दी समिति के अध्यक्ष रहते हुए यह रचना की गई। इसमें महात्मा गांधी द्वारा महत्त्व को लिखे गए पत्रों का आधार लिया गया। इससे ओड़िशा और गांधीजी के संबंध और महात्मा के ओड़िशा के प्रति योगदान के महत्वपूर्ण तथ्य सामने आए हैं। महत्त्व ने लिखा है: “गांधीजी के सत्य और अहिंसा के प्रयोगों में कई अनसुलझे रहस्य हैं; इसलिए वे जो भी निर्णय लेते थे, उसे लागू करने से पहले गहन अध्ययन और अनुसंधान आवश्यक था।” इसमें ओड़िशा के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और भौगोलिक स्थिति का सटीक चित्रण है। उनके इतिहासग्रंथों में विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं और दस्तावेजों का समावेश इसे अत्यंत मूल्यवान बनाता है।

अन्य उल्लेखनीय रचनाओं में ‘अरब सागर से चिलिका’ भी शामिल है, जो उनकी अन्य रचनाओं में से एक है। हरेकृष्ण महताब प्रतिष्ठित साहित्यकार, राजनेता और इतिहासकार थे। उनकी लेखनी में लगभग 20 उपन्यास, लघुकथाएँ और एकांकी शामिल हैं, जो उनकी सृजनशील प्रतिभा का प्रमाण हैं। उनका समाज-इतिहास पर आधारित उपन्यास “गाँव मजलिस” पाठकों द्वारा अत्यधिक प्रशंसित है। महताब नए साहित्यकारों को प्रेरित करते थे और उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने बच्चों के लिए “मीनाबाजार”, मासिक साहित्य पत्रिका “झंकार”, और समबलपुर से प्रकाशित दैनिक “हीराखंड” की स्थापना की। इसके साथ ही उन्होंने साहित्यकारों और लेखकों को एकत्र करने के लिए “विषुव मिलन” जैसी व्यापक साहित्यिक मंच उपलब्ध कराए।

महताब ने इतिहास लेखन में निरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाया। वे ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण सटीक तथ्यों के साथ प्रस्तुत करते थे। विशेषकर ओड़िशा के इतिहास और अज्ञात तथ्यों को जनता तक पहुँचाने में उनका योगदान उल्लेखनीय है। उनके द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेज और तथ्य भविष्य के इतिहासकारों के लिए प्रेरणा और शोध का आधार बने। उनकी रचनाओं में इतिहास और साहित्य का सम्मिश्रण दिखाई देता है। उपन्यास “नूतनधर्म” में उन्होंने गांधीजी की अहिंसा, मानसेवा, किसानों की पीड़ा, विधवाविवाह, हरिजन आंदोलन, अस्पृश्यता उन्मूलन और आत्मनिर्भरता जैसे सामाजिक विषयों को दर्शाया। इसी प्रकार “प्रतिभा”, “टॉउटर”, “अव्यापार” जैसे उपन्यासों में भी ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण मिलता है। उपन्यास “1975” में उन्होंने अत्याचारित जनता और भ्रष्ट नेताओं की आलोचना की।

महताब इतिहास और साहित्य के साथ-साथ राजनीति और सामाजिक सुधार में भी सक्रिय थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन

के दौरान देशी राज्यों के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे स्वतंत्र भारत में राज्य और केंद्र सरकार की व्यवस्थाओं, दोष और सुधारों पर खुले विचार व्यक्त करते थे। उनका प्रयास गड़जात मिश्रण के माध्यम से ओड़िशा और अन्य राज्यों के एकीकरण में सफल हुआ। इसके लिए सरदार पटेल और ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऐटली ने उनकी प्रशंसा की। वे ऐतिहासिक और धार्मिक अनुसंधान में भी सक्रिय थे। उनके लेखन में बौद्ध धर्म, जगन्नाथधाम, यीशु मसीह और ओड़िशा के धार्मिक इतिहास पर गहन अध्ययन दिखाई देता है। उन्होंने जायदेव और ओड़िशा के प्राचीन इतिहास पर भी प्रकाश डाला। उनके ऐतिहासिक दृष्टिकोण और साहित्यिक कृति से ओड़िशा का साहित्य, इतिहास और सामाजिक चेतना समृद्ध हुई। उनके प्रयासों से राज्य का समग्र विकास, राजधानी का निर्माण, हीराकुंड बाँध और माछकुण्ड विद्युत उत्पादन योजना जैसी ऐतिहासिक योजनाएँ संभव हुईं।

निष्कर्ष

महताब एक समर्पित शोधकर्ता और इतिहासकार थे। वे केवल अपने शोध के दौरान सतर्क नहीं रहते थे, बल्कि इतिहास और अनुसंधान से जुड़े व्यक्तियों को इस संबंध में बार-बार सचेत करते रहते थे। 1980 में जब उन्होंने रामायण अनुसंधान पर चर्चा की, तब उन्होंने इतिहास के महत्व पर विचार व्यक्त किए, जो वास्तव में महत्वपूर्ण थे। उन्होंने कहा "यदि इतिहासकार राजनीति से दूर नहीं रहते, तो इतिहास कभी निष्पक्ष नहीं हो सकता। राजनीतिक नेताओं के निर्देशन में इतिहास या साहित्य लेखन समाज के लिए लाभकारी कभी नहीं हो सकता।" इसलिए, जब इतिहास लिखा जाता है, विशेषकर ओड़िशा के इतिहास पर चर्चा करते समय, कई शोधकर्ताओं और इतिहासकारों ने हरेकृष्ण महताब की किताबों, सूचनाओं और विचारों को सहायक साधन के रूप में स्वीकार किया है। भारत के प्राचीन इतिहास के अध्ययन और संग्रह के लिए उन्होंने अनुसंधान को अधिक व्यापक बनाने का आह्वान किया।

अनुसंधान की सहायता के लिए महताब के प्रयासों के परिणामस्वरूप स्थापित हुए हैं राज्य पुस्तकालय और आधुनिक संग्रहालय। उनके प्रयासों की परिणति 'कलिंग हिस्टोरिकल रिसर्च सोसाइटी' और भुवनेश्वर के 'रेकॉर्ड मिशन' एवं 'इतिहास कांग्रेस' के रूप में हुई। उनके निर्देशन में पुरातत्व विभाग द्वारा शिशुपालगढ़ के खनन कार्य की भी शुरुआत हुई। जातीय संगठन के साथ ओड़िशा की अर्थव्यवस्था, राजनीति और कला के विकास के संदर्भ में महताब इतिहास पृष्ठ पर जीवंत दिखाई देते हैं। इस प्रकार, नये भारत के निर्माता के रूप में हरेकृष्ण महताब को सम्मानपूर्वक स्वीकार किया जाता है। एक इतिहासकार और इतिहास के चरित्र के रूप में उन्होंने हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित किया। वे केवल इस भूमिका का निर्वाह ही नहीं कर रहे थे, बल्कि अपने लिखित योगदान के माध्यम से उन्होंने ऐतिहासिक ज्ञान और अपरिचित तथ्यों की अमूल्य धरोहर छोड़ दी। एक विद्वान नेता और सुसंस्कृत लेखक के रूप में उनकी प्रसिद्धि मुख्यतः उन्हें इतिहासकार महताब के रूप में अधिक परिचित कराती है।

संदर्भ सूची

1. महताब हरेकृष्ण (1948) *ओड़िशा इतिहास*, प्रजातंत्र प्रचार समिति, कटक।
2. कर सौरीबंधु (2004) *हरेकृष्ण महताब*, ओड़िशा साहित्य अकादेमी, भुवनेश्वर।
3. सामल बसंत कुमार (1991) *ओड़िशार संस्कृति*, साहित्य और महताब, श्रीनिवास प्रिंटर्स, खोर्धा।
4. महताब हरेकृष्ण (1977) *दशवर्ष ओड़िशा*, कटक स्टुडेंट स्टोर, कटक।
5. आचार्य प्यारीमोहन (1925) *ओड़िशार इतिहास*, उत्कल साहित्य प्रेस, कटक।
6. पाणिग्राही, कृष्णचंद्र (1962) *इतिहास और किंवदन्ति*, उत्कल विश्वविद्यालय, बाणीबिहार, भुवनेश्वर।
